अपराजिता : वर्ष 53 अंक 01: 2025
स्थापना वर्ष : 1972 (प्रिंट), 2025 (ऑनलाइन)

'तकनीकी नवाचारों' ने नौकरियाँ कम की हैं, रोजगार की सम्भावनाओं को अनंत विस्तार दिया है

प्रो. सत्यप्रकाश
प्रोफ़ेसर एवम् अध्यक्ष, वाणिज्य संकाय

बदली तो है दुनिया। 'तकनीकी नवाचारों' ने कार्यपद्धति, समयबद्धता और परिणामोंन्मुखता सबमें तो बदलाव लाया है। अब बैंकों में मोटे मोटे रजिस्टर्स पर कलम टिकाये चश्में के अंदर से कस्टमर को घूरतीं निगाहें नहीं दिखतीं। नहीं दिखाई देतीं हैं बैंकों के अंदर की भीड़ जिसमें एक व्यक्ति अपनी गाढ़ी कमाई से की गयी बचत का पैसा निकालने के लिए विथड्रोल फॉर्म लेकर काउंटर-काउंटर भटकता रहता था। रेल के टिकट के आरक्षण के लिए पिछली रात से लगने वाली कतारें अब नहीं लगतीं। कभी गाँव में छप्पर भी उठाने के लिए लोगों को खोजना पड़ता था, अब पुलों और सड़कों के बड़े बड़े बीम उठाने के लिए भी श्रमिकों की बड़ी संख्या की जरूरत नहीं होती। यह सब संभव हो पाया है तो सिर्फ तकनीकी और प्रौद्योगिकी के विकास से। तो क्या 'तकनीकी नवाचारों' ने मानव श्रम को विस्थापित कर दिया है ? क्या मनुष्य नौकरी नहीं करेगा? क्या अब सारे काम मशीनों द्वारा ही किये जायेंगे? ऐसे कैसे समाधान होगा वेरोजगारी की समस्या का जिस देश व प्रदेश में जनसँख्या की बहुलता है ? विशेषकर बिहार जैसे राज्य में जहाँ से देश के किसी भी बड़े शहर में जाने वाली रेल के द्वितीय श्रेणी में भरे लोगों की गिनती सम्भव नहीं होती। ये यक्ष प्रश्न हैं जिनका समुचित उत्तर ढूढ़ पाना अनिवार्य ही नहीं समीचीन भी है।

अत्यंत सहज शब्दों में उत्तर दें तो कहा जा सकता है कि हाँ जैसे–जैसे तकनीकी और प्रौद्योगिकी का विकास हुआ है पारम्परिक नौकरियां कम हुई हैं, 20 कर्मचारियों की संख्या पर रेलमपेल करने वाला बैंक आज 5 कर्मचारियों की संख्या पर बेहतर सेवा दे रहा है। सैकड़ो ट्रैफिक कर्मियों को तपती दोपहरी में खड़े करने के बावजूद जाम में कराहने वाले शहर आज कर्मियों को ड्यूटी से हटाकर भी तकनीकी के बलबूते फर्राटे भर रहे हैं। हर सरकारी, अर्धसरकारी प्रतिष्ठानों में कर्मियों की संख्या कम हुई है। कृषि और निर्माण जैसे पारंपरिक उद्योगों में 'तकनीकी नवाचारों' का प्रभाव पड़ा है। कृषि में 'ड्रोन टेक्नोलॉजी' और 'स्मार्ट सेंसर्स' का उपयोग किया जा रहा है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) की एक रिपोर्ट के अनुसार, ऐसे 'तकनीकी नवाचारों' से फसल उत्पादन में 20-30% की वृद्धि हुई है। लेकिन सच यह भी है कि मशीनों के उपयोग से कुछ पारंपरिक कृषि कार्यों में श्रमिकों की आवश्यकता में कमी आई है। निर्माण क्षेत्र में 'ऑटोमेशन' और 'रोबोटिक्स' का उपयोग बढ़ा है। "भारत के निर्माण क्षेत्र में रोबोटिक्स के बढ़ते उपयोग" पर एक अध्ययन के अनुसार, यह क्षेत्र 2025 तक लगभग 60% स्वचालित हो जायेगा। इससे कई श्रमिकों को अपनी नौकरियों से हाथ धोना पड़ेगा।

किन्तु यह तस्वीर का एक पहलू भर है, सच यह है कि 'तकनीकी नवाचारों' ने पारम्परिक नौकरियों में कमी भर की है रोजगार की संभावनाओं को अनंत विस्तार दिया है। आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में तकनीकी दक्षता केवल नौकरी पाने का साधन नहीं है, बल्कि यह आत्मनिर्भरता और उद्यमिता का अवसर भी उपलब्ध कराती है। इसने 'नियत वेतन की सीमित संकल्पना' को 'असीमित आय अर्जन की सम्भावना' में परिवर्तित किया है। बदलाव बस इतना हुआ कि श्रम की प्रवृत्ति बदल गयी अब

कष्टकारक परिस्थितियों में असह्य शारीरिक श्रम को ही नौकरी नहीं कहते, तकनीक के सीमित उपयोग के साथ मानव मन की असीमित शक्ति का मिश्रण आय उपार्जन का तरीका है। कुल मिलाकर तकनीकी विकास ने एक ऐसा फलक दिया है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपने मानसिक क्षमता का उपयोग कर आय उपार्जन की असीमित सम्भावना है।

'डेटा एनालिटिक्स', 'साइबर सुरक्षा' और 'आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस' जैसे क्षेत्रों में नए रोजगार सृजित हो रहे हैं। ग्लोबल एक्स्पर्ट्स की एक रिपोर्ट के अनुसार, 2025 तक भारत में डेटा साइंस में 11 मिलियन नई नौकरियाँ उत्पन्न होने की उम्मीद है। डिजिटल प्लेटफार्मों का विकास जैसे कि ई-कॉमर्स और मोबाइल एप्लिकेशन ने स्थानीय उद्यमियों को अपने उत्पादों और सेवाओं को बड़े बाजार में पेश करने का अवसर दिया है। राजनीति का क्षेत्र जिसे रोजगार की दृष्टि से सदैव ही बंजर माना गया आज तकनीकी के उपयोग से रोजगार की अनंत संभावनाएं लेकर प्रस्तुत है। पॉलिटिकल कंसल्टेंट्स, पॉलिटिकल एनालिस्ट, पॉलिटिकल एडवाइजर, स्लोगन राइटर, कंटेंट राइटर, कैम्पेन मेनेजर, कैम्पेन डिज़ाइनर, सोशल मीडिया मेनेजर, सर्वे ऑर्गनाइजर, सर्वे डेटा एनालिस्ट, स्पीच राइटर, फण्ड मेनेजर, आदि-आदि जैसे पदों हेतु रोजगार की असीमित संभावनाएं हैं।

बिहार, जिसे त्रेता युगीन सांस्कृतिक और मध्यकालीन ऐतिहासिक समृद्धि का गौरव प्राप्त है जिसने आधुनिक कालीन राजनीति को राजेंद्र बाबू, जयप्रकाश नारायण और कर्पूरी ठाकुर जैसा नायाब हीरा दिया है आज भी कई सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना कर रहा है। राज्य की बेरोजगारी दर 2022 में 11.4% थी, जो राष्ट्रीय औसत से कहीं अधिक है। यहां की युवा जनसंख्या, जो लगभग 50% है, राज्य के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है उन्होंने इसकी पहल भी की है 2022 में बिहार में लगभग 3,000 स्टार्टअप्स पंजीकृत हुए, जो इस बात का प्रमाण है कि 'तकनीकी नवाचारों' के माध्यम से युवाओं ने स्वरोजगार के नए रास्ते खोजे हैं। सरकार द्वारा चलाए जा रहे "स्टार्टअप इंडिया" और "मेक इन इंडिया" जैसे कार्यक्रमों ने भी इस दिशा में सकारात्मक प्रभाव डाला है। बिहार सरकार ने भी युवा उद्यमियों को सहायता प्रदान करने के लिए विशेष योजनाएँ बनाई हैं।

'तकनीकी नवाचारों' ने नए अवसरों और रोजगार की संभावनाओं का अनंत विस्तार किया है। इस परिवर्तन को स्वीकार करना और अपनी क्षमताओं को विकसित करना आवश्यक है। यदि हम 'तकनीकी नवाचारों' का सही उपयोग करें और युवाओं को उचित प्रशिक्षण प्रदान करें, तो यह निश्चित रूप से बिहार के उज्जवल भविष्य की ओर ले जा सकता है। रोजगार के नए अवसरों की खोज में हमें 'तकनीकी नवाचारों' को अपनाना होगा, ताकि हम इस युग की चुनौतियों का सामना कर सकें और अपने सामर्थ्य का सही उपयोग कर सकें।

* * *